The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 11 | November 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारतीय कला, संस्कृति और परंपरा में राजस्थान का स्थान : एक अध्ययन

डॉ0 दिनेशचंद्र माली

प्राचार्य, श्रीमती धारीणीबेन ए. शुक्ला बी. एड. कॉलेज, महेमदाबाद, जिला-खेड़ा (गुजरात)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17941943

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-11-2025

Published: 10-12-2025

Keywords:

मांडणा, *पिछवाई*, *कावड़*, *गोदना*, *मधुबनी*, *सांझी कला*, *वारली चित्रकला*

ABSTRACT

भारत के लोग विभिन्न लोक कलाओं से समृद्ध हैं। लोक कलाओं में स्मृति और कल्पना का गहरा संबंध है। सृजन ने लोक कलाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जहाँ यह स्मृति और कल्पना का आह्वान करती है। लोक कलाएँ भारतीय संस्कृति और पहचान के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, और ये सीधे लोगों से जुड़ी हैं। लोक कलाएँ सबसे मौलिक कलाकृतियाँ हैं जो लोगों की आत्मा से जन्म लेती हैं। लोक कलाएँ मुख्यतः दो उद्देश्यों के लिए बनाई जाती हैं, जैसे लागू और सजावटी। लोक कलाएँ लोगों में सौंदर्य बोध को बढ़ाने के साथ -साथ भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। भारत में, राजस्थान अपनी विभिन्न प्राचीन लोक कलाओं के लिए जाना जाता है, जिनमें मांडणा , पिछवाई और कावड़ शामिल हैं। बहुत ही विशेष महत्व और महान सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव हैं। राजस्थान की ये लोक कलाएँ समय-समय पर कई विकट परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं और इन परिस्थितियों ने इसकी प्रमुखता को प्रभावित किया है। इन लोक कलाओं को कई कलाकारों और कला प्रेमियों द्वारा निरंतर प्रोत्साहित किया जाता है , वे इसकी पारंपरिक विरासत को बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं। आज के संदर्भ में लोक कलाओं को और अधिक प्रमुख बनाने के लिए, कला प्रेमियों ने पारंपरिक स्पर्श के साथ कई तरह से इन कला रूपों को समकालीन भी बनाया है। लोक कलाएँ ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में जानने के लिए हमेशा मददगार होती हैं और ऐतिहासिक दृश्य दस्तावेजों के रूप में मानी जाती हैं। राजस्थान की लोक कलाएँ धर्मों, अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों से संबंधित समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर रही हैं। यह शोध पत्र राजस्थान के मांडणा , पिछवाई और कावड़ के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करने का एक छोटा सा प्रयास है।

परिचय:

लोक कलाओं की उत्पत्ति सभ्यता के साथ ही अस्तित्व में आई। यह कहा जा सकता है कि कलाएँ मानवजाति के अस्तित्व की सहचरी के रूप में उसके साथ रही हैं। लोक कलाएँ अद्वितीय हैं, क्योंकि ये लोक की आत्मा से उत्पन्न होती हैं। प्रागैतिहासिक काल में लोक कलाओं का विकास किसी समुदाय की वास्तविक आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करने के लिए हुआ था। मनुष्य प्राचीन काल से ही सौंदर्य के प्रति सचेत रहा है, चाहे वह गुफाओं की दीवारें हों या विभिन्न कृतियों में प्रयुक्त हथियार या बर्तन। आर्य परंपरा और वेदों में इनके अनेक उदाहरण मिलते हैं। वैदिक काल से ही अग्नि, सूर्य, इंद्र और वरुण की पूजा हेतु यज्ञ और हवन के अनुष्ठान किए जाते रहे हैं। हवन की विधि को विभिन्न प्रकार के अनाजों, हल्दी, आटे और कुमकुम से रेखाओं, त्रिभुजों, आयतों आदि के आकार में सजाकर विभिन्न प्रतीकात्मक रूप दिए गए, जिनका एक अर्थ होता है। लोक कला और लोक जीवन एक-दूसरे के पूरक हैं, अनादि काल से इसके अस्तित्व की छाप अतीत के सभी लोगों पर विभिन्न रूपों में बनी रही. कला और संस्कृति के विकास में लोक कलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोक कलाओं का विकास घरों, पूजा-स्थलों और घर की महिलाओं द्वारा किए जाने वाले आँगन में हुआ। लोक कलाओं की शुरुआत घर से ही, बिना किसी प्रसिद्धि और बौद्धिक स्पर्श के, धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के साथ, शांतिपूर्वक और निश्छल भाव से हुई। भारत में लोक कलाएँ स्वतंत्रता और मौलिकता के साथ आगे बढ़ती हैं। उदाहरण के लिए, भारत में लोक कलाओं के विशिष्ट संग्रह मौजूद हैं। ऐपण कला, लघु चित्रकला, भील कला, डोकरा कला, गोदना कला, कलमकारी चित्रकला, कालीघाट चित्रकला, कावड़ कला, भित्तिचित्रकला, मधुबनी कला, मंडला कला, मंडाना चित्रकला, पट्टचित्र , फड़ चित्रकला, पिछवाई चित्रकला, सांझी कला, वार ली चित्रकला और भी बहुत कुछ। भारत की लोक कलाएं इसके दर्शन और पहचान का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा हैं; क्योंकि लोक कलाएंमानव जीवन के आध्यात्मिक स्वरूपसे जुड़ी हैंभारतीय लोक कलाएं दृश्य घटनाएं हैं जिनकी सुंदर सौंदर्य गुणों के साथ अनूठी परिभाषा है।लोक कलाओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक अपनी सांस्कृतिक और पारंपरिक जीवंतता को बदले बिना पारित किया जाता है, यही कारण है कि भारतीय लोक कलाएं अभी भी जीवित हैं और इन्हें अनौपचारिक रूप से सफलतापूर्वक सिखाया जाता है। लोक कलाएं केवल कलाकारों की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि उनकी कहानियों, यादों, मूल्यों और विश्वासों को चित्रित करने का एक तरीका भी हैं.

उद्देश्य:

- राजस्थानी लोक कलाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में जानना।
- लोक कलाओं और मानव के बीच पूरक संबंधों का अध्ययन करना।
- विभिन्न कहानियों, स्मृतियों, मूल्यों और विश्वासों को समझना, जो लोक कलाओं का अभिन्न अंग हैं।
- ग्रामीण महिलाओं के बीच मांडणा की लोकप्रियता और शहरी लोगों के बीच इसकी स्वीकार्यता पर चर्चा करना।
- पिछवाई चित्रकला की विरासत और उसके समकालीन पहलुओं का विश्लेषण करना।

- कावड़ की विभिन्न विशेषताओं का अध्ययन करनासाथ ही सुथार, चित्रकार और कावड़िया भट्ट की सहयोगी गतिविधियाँ।

- मांडणा, पिछवाई और कावड़ के सौंदर्य और दृश्य गुणों को समृद्ध करने वाले तत्वों पर चर्चा करना।

1. डेटा और कार्यप्रणाली:

वर्तमान अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। प्राथमिक स्रोत पारंपरिक कलाकारों से व्यक्तिगत साक्षात्कार और वास्तविक स्थलों पर कलाकृतियों के अवलोकन द्वारा एकत्रित किए गए हैं। इस शोध पत्र में प्राथमिक आँकड़े एकत्र करने के लिए अवलोकन विधि का गहन उपयोग किया गया है। इस शोध पत्र में अवलोकन विधि को एक वैज्ञानिक उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया है। इस विधि से एकत्रित जानकारी और दृश्य, लोक कलाओं और विशेष रूप से कला के क्षेत्र में वर्तमान में हो रही गतिविधियों से जुड़ने में मदद करते हैं।मंडाना , पिछवाई और कावड़। साथ ही, द्वितीयक स्रोत अनेक पुस्तकें, इंटरनेट, पत्रिकाएँ और अप्रकाशित आँकड़े हैं। इस शोध पत्र के लिए जानकारी एकत्र करने से पहले, सभी द्वितीयक स्रोतों की सूक्ष्म जाँच की गई है और फिर इस शोध पत्र के संदर्भ में पर्याप्त आँकड़े एकत्र किए गए हैं। सभी आँकड़ों की वैज्ञानिक व्याख्या बौद्धिक साहसिकता के नए रास्ते खोलती है और लोक कलाओं पर इस शोध पत्र के वास्तविक महत्व को भी उजागर करती है। कार्यप्रणाली की ये सभी प्रक्रियाएँ इस शोध पत्र को उचित रूप से प्रस्तुत करने और इसे और अधिक वैज्ञानिक बनाने में सहायक हैं।

2. मांडणा: लोक कला का एक प्राचीनतम रूप:

भारतीय कला, संस्कृति और परंपरा में, राजस्थान अपनी विविध कला विधाओं और अनूठी संस्कृति के साथ सबसे रंगीन और मनमोहक राज्य के रूप में प्रतिष्ठित है। राजस्थान में लोक कला का सबसे प्राचीन रूप है:मंदाना, जो सदियों से जारी है। मांडना ज्यादातर राजस्थान में सबसे पुराने आदिवासी समुदाय की महिलाओं द्वारा चित्रित किया जाता है, जिसे मीणा के रूप में जाना जाता है। मांडना घरों की दीवारों और फर्श पर चित्रित किया जाता है। मांडना घरों के प्रवेश द्वार पर बुराई को रोकने और घर में देवताओं के आशीर्वाद का स्वागत करने के तरीके के रूप में किया जाता है। भारतीय संस्कृति में यह माना जाता है कि मांडना बनाना एक सजावटी विशेषता है। भारत में मांडना प्रमुख अवसरों और आयोजनों में देखा जाता है और इसका धार्मिक और शुभ महत्व है। ऐसे अवसर और आयोजन धार्मिक पूजा (दिवाली पर देवी लक्ष्मी , देव प्रबोधिनी एकादशी), विभिन्न त्यौहार (दिवाली, होली, नवरात्रि), मानव जीवन में शुभ दिन (उदाहरण के लिए जन्म या विवाह) और प्रतिज्ञा (विवाह, गणगौर , करवा चौथ) हैं। मांडना मांडणा शब्द की उत्पत्ति मंडाण से हुई है जिसका राजस्थान में अर्थ घरों की सजावट और सौंदर्यीकरण होता है। यह लोक कला मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा की जाती है, भारत में आमतौर पर घर और परिवार की भलाई का ख्याल रखना महिलाओं की सामाजिक भूमिका होती है। मांडणा एक पारंपरिक कला है और इसे किसी औपचारिक प्रशिक्षण के माध्यम से आगे नहीं बढ़ाया जाता है। पहले इसे एक अनुशासन के रूप में मान्यता नहीं दी गई थी लेकिन अब बदलाव हो रहे हैं और भारतीय लोक कलाओं में मांडणा का विशेष महत्व है। लड़कियां अपनी मां और दादी को देखकर यह

कला सीखती हैं। मांडणा को एक ऐसे कौशल के रूप में देखा जाता है जो पीढ़ियों से महिलाओं को जोड़ता रहा है। यह देखा गया है कि मांडणा एक परिवार की महिलाओं द्वारा किया जाता है। कला के इस रूप को स्कूलों और कॉलेजों में किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। भारत में मांडणा की मौखिक परंपरा है और इसे व्यावहारिक रूप से केवल अनुकरण द्वारा ही सीखा जा सकता है ।

दशकों सेमंदाना जिसने मिट्टी के घरों को सजाया है, अब मिट्टी के घरों की जगह कंक्रीट के घर और सीमेंट के फर्श ने ले ली है। मांडना एक प्रकार की लोक कला है जो गांव की महिलाओं में लोकप्रिय है और अब इस कला को शहरी लोगों द्वारा अपनाया जा रहा है। मांडना चित्रकला का एक सरल रूप है जो भारतीय लोक कलाओं में बहुत आकर्षक है। मांडना बनाने में जिन सामग्रियों का उपयोग किया जाता है वे प्राकृतिक सामग्री हैं जो पर्यावरण के अनुकूल हैं और इतनी महंगी नहीं हैं शर्मा । मांडना के चित्र बहुत सरल हैं और जो परिप्रेक्ष्य और अनुपात के लिए किसी भी निर्धारित सिद्धांतों का पालन नहीं करते हैं। आजकल, मांडना के मूल चित्र बनाने के लिए चाक का उपयोग किया जाता है रहमान ।

मांडना बनाने और चित्रित करने की कुछ प्रक्रिया है । सबसे पहले , दीवारों और फर्श को मिट्टी और गाय के गोबर से लीपा जाता है, फिर दीवारों और फर्श पर रूपांकनों को बनाया जाता है। एक बार रूपांकनों को बनाने के बाद, उन्हें रंगों से भरा जाता है। रूपांकनों को भरना अधिक चित्रकारी है, और ये बिना पूर्व योजना के किया जाता है। मांडना की रंग योजना बहुत सरल है, जो कि खड़िया (सफेद रंग) और गेरू (लाल रंग) हैं। विशेष रूप से, इन रंगों को चुना जाता है, क्योंकि ये प्राकृतिक परिवेश में आसानी से उपलब्ध होते हैं

3. पिछवाई: एक धार्मिक कपड़ा पेंटिंग:

पिछवाई राजस्थान की लोक-कला का एक और रूप है जो अपनी पारंपरिक जीवंतता और सुंदरता के साथ जीवित है । चित्रकला की उत्पत्ति चार सौ साल पहले राजस्थान के उदयपुर के पास स्थित नाथद्वारा में हुई थी। पिछवाई शब्द की उत्पत्ति ' पिच्छ ' से हुई है , जिसका अर्थ है पीठ और ' वाई ' का अर्थ है कपड़ा लटकाना।पिछवाई एक धार्मिक वस्त्र चित्रकला हैजो मंदिरों में मूर्तियों के पीछे लगाई जाती है। पिछवाई , भगवान कृष्ण के एक अन्य रूपश्रीनाथद्वारा गोवर्धन पर्वत धारण करने की कथा को दर्शाती है । पिछवाई मेंश्रीनाथके रूप में दर्शाया गया है, जो सात वर्ष के बालक के रूप में प्रकट हुए देवता हैं। पिछवाई के साथ एक रोचक इतिहास जुड़ा है ।वृंदावन के लोगों को भगवान कृष्ण ने तब बचाया था जब उन्होंने भारी आंधी और बारिश के रूप में भगवान इंद्र के प्रकोप का सामना किया था। उस समय, कृष्ण नेगोवर्धन पर्वत उठा लिया था। वृंदावन के लोगों के लिए अपनी छोटी उंगली पर पिछवाई बनाई, जहाँ सभी लोगों ने शरण ली। यह सब देखकर भगवान इंद्र को अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होंने विपत्ति रोक दी। उस समय से लोगों ने गोवर्धन पर्वत की पूजा शुरू कर दी। यह कला जटिल और देखने में अद्भुत है। पारंपरिक पिछवाई बनाने की प्रक्रिया में कुछ हफ़्ते और कभी-कभी महीनों का समय लगता है। इसके लिए बड़े कौशल की भी आवश्यकता होती है क्योंकि छोटी से छोटी चीज़ को भी सटीकता से चित्रित करना होता है। लोकप्रिय रूप से चित्रित विषयवस्तुपिचवाईपेंटिंग में राधा-कृष्ण, गोपियाँ , गायें, कमल हैं। होली, शरद पूर्णिमा, नंद महोत्सव, गोवर्धन पूजा, रास लीला, जन्माष्टमी और गोपाष्टमी जैसे त्योहार और उत्सव लियोन्स.

पिछवाई के चारों ओर चौबीस डिब्बे होते हैं, जिन्हें आमतौर पर स्वरूप कहा जाता है। इनमें से प्रत्येक परकृष्ण , गोपियाँ और कई अन्य तत्व अंकित होते हैं। पिछवाई चित्रकला में श्रीनाथ जीकाजटिल श्रृंगार दर्शनीय रूप से मनमोहक होता है। पिछवाई चित्रकला में बहुत कुछ होता है, फिर भी यह किसी भी तरह से भीड़भाड़ वाला नहीं लगता। पिछवाई चित्रकला सौंदर्य संतुलन और सुंदरता का एक अनूठा उदाहरण है। रंगों की जीवंतता और विस्तृत चित्रण ही पिछवाई की ताकत हैं। मूल रूप से पिचवाई पेंटिंग हाथ से काते गए स्टार्च वाले सूती कपड़े पर की जाती थी, लेकिन अब जिस सतह पर पिचवाई पेंटिंग बनाई जाती है वह ज्यादातर कागज पर होती है।

पिछवाई पेंटिंग शुरू करने के लिए कलाकारों को कपड़े या कागज पर उन घटनाओं या कहानियों के रेखाचित्र बनाने होते हैं जिन्हें वे चित्रित करना चाहते हैं। इसके बाद उस विशेष घटना या कहानी की आवश्यकता या मांग के अनुसार बहुत ही सजावटी और सुंदर चित्र बनाए जाते हैं। जब रेखाचित्र तैयार हो जाते हैं, तो वे प्राकृतिक ब्रशों के साथ जैविक और प्राकृतिक रंगों से चित्रकारी शुरू करते हैं। पहले प्राकृतिक रंगों को इकट्ठा करना बहुत मुश्किल था। ये प्राकृतिक रंग विभिन्न प्राकृतिक स्रोतों जैसे सोना, चांदी, कोयला, नील, केसर, जस्ता और अन्य प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किए जाते थे। पिछवाई पेंटिंग में ज्यादातर चमकीले और गहरे रंग जैसे पीला, हरा, काला और लाल इस्तेमाल किया जाता है और आभूषणों को रंग के रूप में सोने से चित्रित किया जाता है। पिछवाई पेंटिंग की रूपरेखा या बॉर्डर क्रिस्टल तत्वों और विभिन्न सजावटी तत्वों से समृद्ध होते हैं श्रीनाथ जी , श्रीनाथ जी को बड़ी आँखें, बड़ी नाक और मोटा पेट जैसीविशिष्ट विशेषताएँ प्रदान करते हैं। श्रीनाथ जी के चेहरे की विशिष्ट विशेषताएँ और भाव मनमोहक और दिव्य अनुभूतियाँ प्रदान करते हैं। इसलिए, पिछवाई चित्रों में, बारीकियों और विशालता को देखते हुए, कोई भी आसानी से देख सकता है कि इसे बनाने में कितना समय और मेहनत लगी है।

4. कावड़: एक कहानी कहने वाला उपकरण:

लोक कला का एक अन्य रूप जिसे के रूप में जाना जाता है कावड़ जो राजस्थान राज्य में बहुत प्रसिद्ध है। कावड़ की मुख्य विशेषताएँ रंगीन पैटर्न, विस्तृत डिज़ाइन और धार्मिक एवं रहस्यमय तत्वों की उपस्थिति हैं। कावड़ का इतिहास चार सौ साल पुराना है। कुमावत नामक समुदाय ने कावड़ कला की इस सदियों पुरानी परंपरा की शुरुआत की थी। राजस्थान में, पारंपरिक कावड़ बस्सी नामक गाँव में बनाई जाती है, जो भारत के राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।कावड़ कावड़ एक कला रूप है जो कहानी कहने का एक साधन भी है और कभी-कभी लोगों के लिए एक अस्थायी मंदिर का काम भी करता है। कावड़ शब्द किवाड़ शब्द से लिया गया है , जो इसके रूप के प्रति एक स्पष्ट प्रतिक्रिया है।कावड़ एक कला है जिसमें सुथार, चित्रकार और कावड़िया भाट की सामूहिक गतिविधियों की आवश्यकता होती है, वे बढ़ई (सुथार), चित्रकार (चित्रकार) और कहानीकार (कावड़िया भाट) के रूप में लोकप्रिय हैं। कावड़ इसमें कई लकड़ी के पैनल होते हैं जिन्हें एक साथ लटकाया जाता है और उन पर कहानियों के सुंदर दृश्य चित्रित किए जाते हैं। सबसे बाहरी पैनल पर आमतौर पर कहानी के संरक्षक चित्रित होते हैं। भाट प्रत्येक पैनल को खोलते हैं और कावड़ में चित्रित छवियों की मदद से कहानी सुनाते हैं। सभी तहों का खुलना और बंद होना भी एक कहानी कहता है, एक बिंदु पर जब सभी पैनल खुल जाते हैं तो मंदिर प्रकट होता है, जहाँ मुख्य देवता की छवि स्थापित है। दर्शक के लिए यह एक दृश्य-श्रव्य यात्रा जैसा है।

निष्कर्ष :

लोक कलाओं की उत्पत्ति सभ्यता के साथ ही अस्तित्व में आई। यह कहा जा सकता है कि कला मानवजाति के साथ उसके अस्तित्व की साथी बनकर चलती रही है। लोक कलाएँ मानव की आत्मा से जन्म लेती हैं। लोक कलाओं का विकास स्त्री-पुरुष दोनों की गतिविधियों से हुआ। भारत की लोक कलाएँ रचनात्मक स्वतंत्रता और विशिष्टता के साथ आगे बढ़ती हैं। भारत में लोक कलाओं का विशिष्ट संग्रह है और भारतीय लोक कलाएँ सुंदर सौंदर्यात्मक गुणों से युक्त दृश्यात्मक घटनाएँ हैं। भारतीय परंपरा में, राजस्थान अपनी विविध कलाओं और अनूठी संस्कृति के साथ खड़ा है।मंदाना राजस्थान की पिछवाई समकालीन समय में कई कलाकारों और डिजाइनरों को प्रेरित कर रही है। वे कपड़े, बैग और जूते जैसी विभिन्न चीजों में मांडना के रूपांकनों का उपयोग कर रहे हैं। इस प्रकार, मांडना परंपरा और समकालीन दोनों के स्वाद के साथ जीवित है । राजस्थान की पिछवाई पहले केवल मंदिरों में ही लटकाई जाती थी, अब इसके सौंदर्य महत्व के कारण, पिछवाई को घर की दीवारों और अन्य स्थानों पर भी लटकाया जाता है। इसलिए, पारंपरिक कलाकारों को अपनी आजीविका के लिए बेहतर संभावना मिल रही है। कावड़ का मुख्य आकर्षण कहानी और सुथार, चित्रकार और कावड़िया भाट का संयुक्त प्रयास है । राजस्थान इस कला का घर है और भारतीय महाकाव्य कहानियों का इतिहास बताने के लिए इस कला का निर्माण करता रहा है।

लोक कलाओं और उनके सौंदर्यशास्त्र को समझने के लिए, राजस्थान के प्रत्येक क्षेत्र में छोटे संग्रहालय और पुस्तकालय बहुत आवश्यक हैं जो लोक कलाओं के लिए जाने जाते हैं। मांडणा , पिछवाई और कावड़ का युवा पीढ़ी को आत्मनिर्भरता के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उन्हें पुरानी परंपराओं से जुड़ने का अवसर प्रदान करने के संदर्भ में गहरा सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव है। नई पीढ़ियों के बीच लोक कलाओं को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित करने के लिए, स्कूल से विश्वविद्यालय स्तर तक लोक कलाओं को अनिवार्य विषयों के रूप में शुरू करने का समय आ गया है। यह पहल सौंदर्यशास्त्रीय जुड़ाव, उद्यमिता के ज्ञान को बढ़ाएगी, वास्तविक जीवन की स्थितियों का सामना करने का मौका प्रदान करेगी और सबसे महत्वपूर्ण यह कारीगरों को एक बड़ा मंच भी प्रदान करेगी। कई सरकारी एजेंसियां और गैर सरकारी संगठन नियमित रूप से लोक कलाओं के विभिन्न मुद्दों पर काम कर रहे हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से, यह सभी उत्साही लोगों से आगे आने और राजस्थान के साथ-साथ भारत की लोक कलाओं के विकास के लिए पुनर्विचार करने की अपील करता

संदर्भ:

1. गंगोपाध्याय, यू. (2018). *नाथद्वारा: जहाँ भक्ति कला को जन्म देती है*. आउटलुक इंडिया.
2. गोयल, ए. (2021). *कावड़: राजस्थान का रंगीन कहानी संग्रह*.
3. लायंस, टी. (2004). *नाथद्वारा के कलाकार: राजस्थान में चित्रकला का प्रचलन* (pp. 14–20). इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. पाल, एच. बी. (1984). *राजस्थान के हस्तशिल्प* (pp. 1–4). प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार.
5. रहमान, ए. पी. (2020). *मिट्टी के घर लुप्त हो रहे हैं: अगर संरक्षित नहीं किए गए तो दीवारों पर सजी मंदाना कला भी लुप्त हो जाएगी*. गाँव कनेक्शन.
6. रॉसी, बी. (1998). *पेंटिंग के महासागर से: भारत की लोकप्रिय पेंटिंग्स 1589 से वर्तमान तक* (pp. 19–27). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. सबनानी, एन. (2014). *राजस्थान की कावड़ परंपरा* (pp. 13–25). नियोगी बुक्स.
8. शर्मा, एल. (2011). *भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास* (pp. 172–176). गोयल पब्लिशिंग हाउस.